



**Neha Rajpurohit**

24 Mar 2003

09:30 AM

Sirohi

Model: Web-MyKundli

Order No: 121075401

## सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग \_\_\_\_\_: स्त्रीलिंग  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_: 24/03/2003  
दिन \_\_\_\_\_: सोमवार  
जन्म समय \_\_\_\_\_: 09:30:30 घंटे  
इष्ट \_\_\_\_\_: 07:09:10 घटी  
स्थान \_\_\_\_\_: Sirohi  
राज्य \_\_\_\_\_: Rajasthan  
देश \_\_\_\_\_: India

अक्षांश \_\_\_\_\_: 25:53:00 उत्तर  
रेखांश \_\_\_\_\_: 72:58:00 पूर्व  
मध्य रेखांश \_\_\_\_\_: 82:30:00 पूर्व  
स्थानिक संस्कार \_\_\_\_\_: -00:38:08 घंटे  
ग्रीष्म संस्कार \_\_\_\_\_: 00:00:00 घंटे  
स्थानिक समय \_\_\_\_\_: 08:52:22 घंटे  
वेलान्तर \_\_\_\_\_: -00:06:26 घंटे  
साम्पातिक काल \_\_\_\_\_: 20:57:16 घंटे  
सूर्योदय \_\_\_\_\_: 06:38:50 घंटे  
सूर्यास्त \_\_\_\_\_: 18:50:45 घंटे  
दिनमान \_\_\_\_\_: 12:11:55 घंटे  
सूर्य स्थिति(अयन) \_\_\_\_\_: उत्तरायण  
सूर्य स्थिति(गोल) \_\_\_\_\_: उत्तर  
ऋतु \_\_\_\_\_: वसन्त  
सूर्य के अंश \_\_\_\_\_: 09:12:14 मीन  
लग्न के अंश \_\_\_\_\_: 02:32:23 वृष

#### अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति \_\_\_\_\_: वृष - शुक्र  
राशि-स्वामी \_\_\_\_\_: वृश्चिक - मंगल  
नक्षत्र-चरण \_\_\_\_\_: ज्येष्ठा - 4  
नक्षत्र स्वामी \_\_\_\_\_: बुध  
योग \_\_\_\_\_: व्यतिपात  
करण \_\_\_\_\_: बव  
गण \_\_\_\_\_: राक्षस  
योनि \_\_\_\_\_: मृग  
नाड़ी \_\_\_\_\_: आद्य  
वर्ण \_\_\_\_\_: विप्र  
वश्य \_\_\_\_\_: कीटक  
वर्ग \_\_\_\_\_: मृग  
युँजा \_\_\_\_\_: अन्त्य  
हंसक \_\_\_\_\_: जल  
जन्म नामाक्षर \_\_\_\_\_: यू-युक्ता  
पाया(राशि-नक्षत्र) \_\_\_\_\_: ताम्र - ताम्र  
सूर्य राशि(पाश्चात्य) \_\_\_\_\_: मेष

## पंचांग

दादा का नाम \_\_\_\_\_ :  
पिता का नाम \_\_\_\_\_ :  
माता का नाम \_\_\_\_\_ :  
जाति \_\_\_\_\_ :  
गोत्र \_\_\_\_\_ :

| कैलेंडर    | वर्ष          | मास     | तिथि/प्रविष्टे |
|------------|---------------|---------|----------------|
| राष्ट्रीय  | शक : 1925     | चैत्र   | 3              |
| पंजाबी     | संवत : 2059   | चैत्र   | 11             |
| बंगाली     | सन् : 1409    | चैत्र   | 9              |
| तमिल       | संवत : 2059   | पंगुनी  | 10             |
| केरल       | कोल्लम : 1178 | मीनम    | 10             |
| नेपाली     | संवत : 2059   | चैत्र   | 10             |
| चैत्रादि   | संवत : 2059   | चैत्र   | कृष्ण 7        |
| कार्तिकादि | संवत : 2059   | फाल्गुन | कृष्ण 7        |

### पंचांग

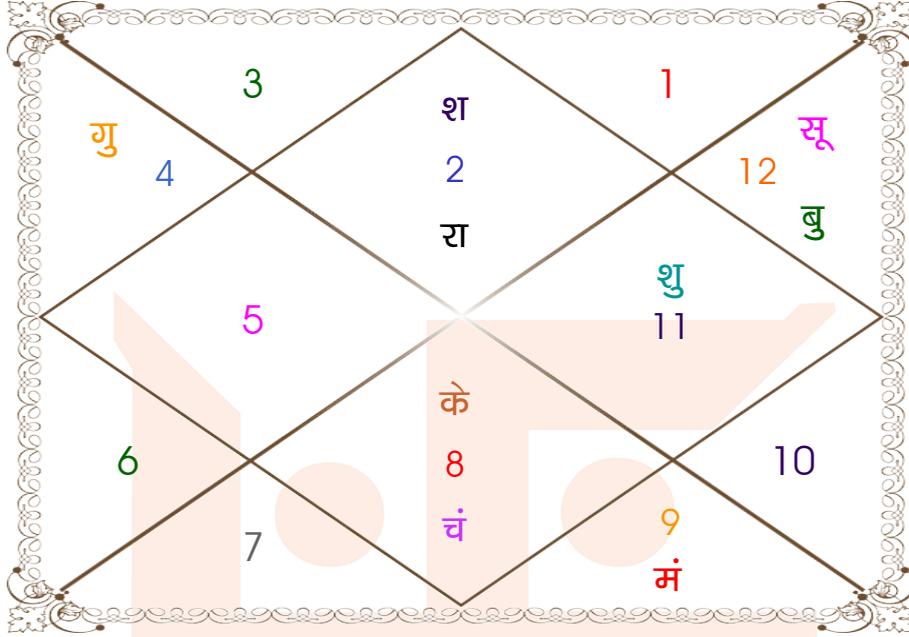
सूर्योदय कालीन तिथि \_\_\_\_\_ : 7  
तिथि समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 19:58:59  
जन्म तिथि \_\_\_\_\_ : 7  
सूर्योदय कालीन नक्षत्र \_\_\_\_\_ : ज्येष्ठा  
नक्षत्र समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 13:39:03 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : ज्येष्ठा  
सूर्योदय कालीन योग \_\_\_\_\_ : व्यतिपात  
योग समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 25:31:39 घंटे  
जन्म योग \_\_\_\_\_ : व्यतिपात  
सूर्योदय कालीन करण \_\_\_\_\_ : विष्टि  
करण समाप्ति काल \_\_\_\_\_ : 08:45:25 घंटे  
जन्म करण \_\_\_\_\_ : बव  
भयात \_\_\_\_\_ : 46:48:06  
भभोग \_\_\_\_\_ : 57:09:28  
भोग्य दशा काल \_\_\_\_\_ : बुध 3 वर्ष 0 मा 18 दि

### घात चक्र

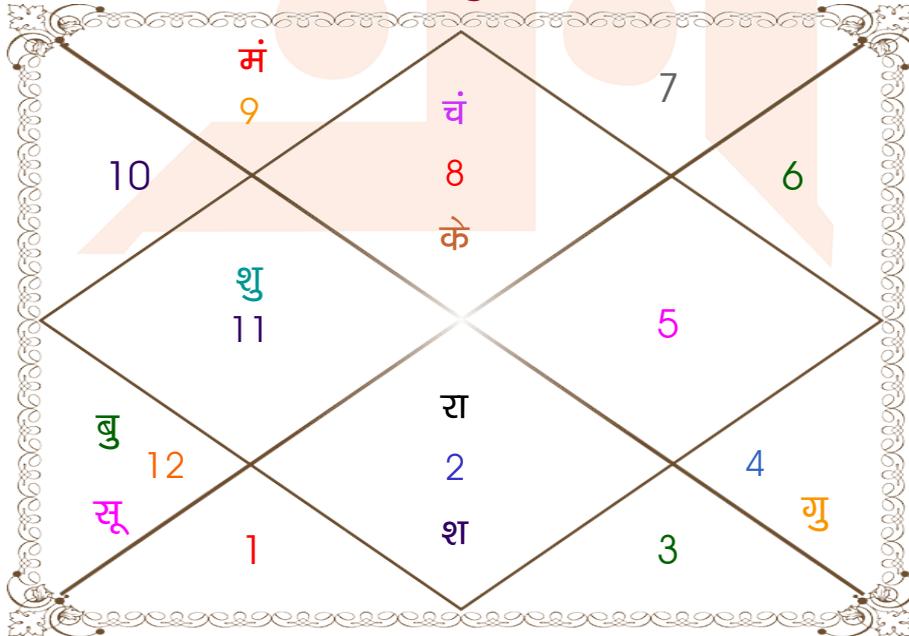
मास \_\_\_\_\_ : आश्विन  
तिथि \_\_\_\_\_ : 1-6-11  
दिन \_\_\_\_\_ : शुक्रवार  
नक्षत्र \_\_\_\_\_ : रेवती  
योग \_\_\_\_\_ : व्यतिपात  
करण \_\_\_\_\_ : गर  
प्रहर \_\_\_\_\_ : 1  
वर्ग \_\_\_\_\_ : सिंह  
लग्न \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
सूर्य \_\_\_\_\_ : मकर  
चन्द्र \_\_\_\_\_ : धनु  
मंगल \_\_\_\_\_ : कुम्भ  
बुध \_\_\_\_\_ : वृश्चिक  
गुरु \_\_\_\_\_ : मीन  
शुक्र \_\_\_\_\_ : मेष  
शनि \_\_\_\_\_ : कर्क  
राहु \_\_\_\_\_ : वृष

# जन्म कुण्डली

## लग्न कुण्डली



## चन्द्र कुण्डली



## लग्न कुण्डली और दशा

### लग्न कुंडली

|          |          |              |    |
|----------|----------|--------------|----|
| बु<br>सू |          | रा<br>ल<br>श |    |
| शु       |          |              | गु |
|          |          |              |    |
| मं       | के<br>चं |              |    |

### लग्न कुंडली

|              |  |          |                |
|--------------|--|----------|----------------|
| रा<br>श<br>ल |  | बु<br>सू |                |
|              |  |          | शु             |
| गु           |  |          |                |
|              |  |          | मं<br>चं<br>के |

विंशोत्तरी  
बुध 3वर्ष 0मा 18दि  
बुध

24/03/2003

12/04/2109

|        |            |
|--------|------------|
| बुध    | 11/04/2006 |
| केतु   | 11/04/2013 |
| शुक्र  | 11/04/2033 |
| सूर्य  | 11/04/2039 |
| चन्द्र | 11/04/2049 |
| मंगल   | 10/04/2056 |
| राहु   | 11/04/2074 |
| गुरु   | 11/04/2090 |
| शनि    | 12/04/2109 |

योगिनी

भद्रिका 0वर्ष 10मा 23दि  
मंगला

14/02/2025

14/02/2026

|         |            |
|---------|------------|
| मंगला   | 24/02/2025 |
| पिंगला  | 16/03/2025 |
| धान्या  | 16/04/2025 |
| भ्रामरी | 26/05/2025 |
| भद्रिका | 16/07/2025 |
| उल्का   | 15/09/2025 |
| सिद्धा  | 25/11/2025 |
| संकटा   | 14/02/2026 |

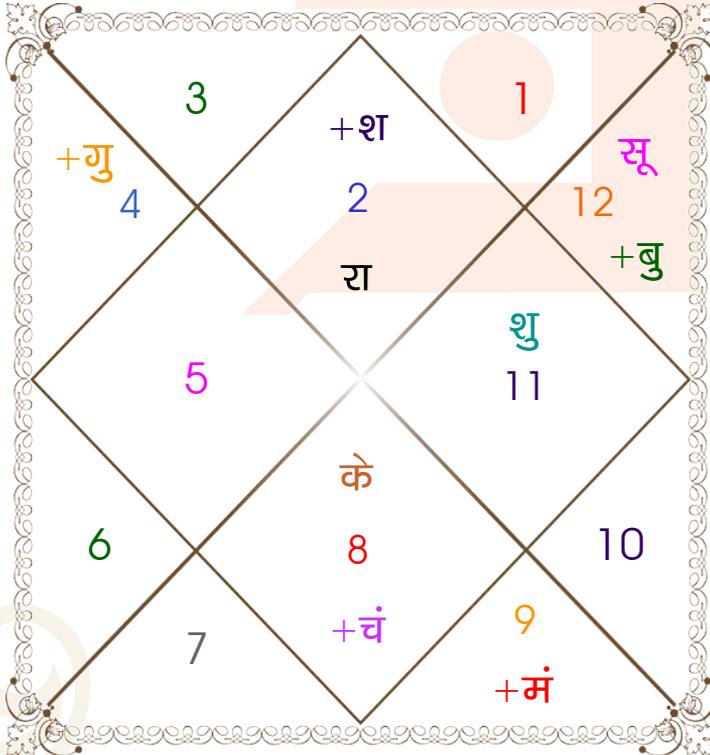
## ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

| ग्रह    | व | अ | राशि   | अंश      | गति       | नक्षत्र    | पद | नं. | रा    | न     | अं.   | स्थिति     |
|---------|---|---|--------|----------|-----------|------------|----|-----|-------|-------|-------|------------|
| लग्न    |   |   | वृष    | 02:32:23 | 399:47:46 | कृतिका     | 2  | 3   | शुक्र | सूर्य | गुरु  | ---        |
| सूर्य   |   |   | मीन    | 09:12:14 | 00:59:30  | उ०भाद्रपद  | 2  | 26  | गुरु  | शनि   | शुक्र | मित्र राशि |
| चंद्र   |   |   | वृश्चि | 27:36:28 | 13:53:21  | ज्येष्ठा   | 4  | 18  | मंगल  | बुध   | गुरु  | नीच राशि   |
| मंगल    |   |   | धनु    | 18:18:52 | 00:37:44  | पूर्वाषाढा | 2  | 20  | गुरु  | शुक्र | राहु  | मित्र राशि |
| बुध     | अ |   | मीन    | 11:24:26 | 02:00:52  | उ०भाद्रपद  | 3  | 26  | गुरु  | शनि   | चंद्र | नीच राशि   |
| गुरु    | व |   | कर्क   | 14:21:16 | 00:02:05  | पुष्य      | 4  | 8   | चंद्र | शनि   | राहु  | उच्च राशि  |
| शुक्र   |   |   | कुंभ   | 01:47:59 | 01:11:47  | धनिष्ठा    | 3  | 23  | शनि   | मंगल  | बुध   | मित्र राशि |
| शनि     |   |   | वृष    | 29:03:35 | 00:03:14  | मृगशिरा    | 2  | 5   | शुक्र | मंगल  | शनि   | मित्र राशि |
| राहु    |   |   | वृष    | 07:21:46 | 00:00:41  | कृतिका     | 4  | 3   | शुक्र | सूर्य | केतु  | मित्र राशि |
| केतु    |   |   | वृश्चि | 07:21:46 | 00:00:41  | अनुराधा    | 2  | 17  | मंगल  | शनि   | केतु  | मित्र राशि |
| हर्ष    |   |   | कुंभ   | 06:48:31 | 00:03:03  | शतभिषा     | 1  | 24  | शनि   | राहु  | राहु  | ---        |
| नेप     |   |   | मक     | 18:32:55 | 00:01:36  | श्रवण      | 3  | 22  | शनि   | चंद्र | बुध   | ---        |
| प्लूटो  | व |   | वृश्चि | 26:03:11 | 00:00:02  | ज्येष्ठा   | 3  | 18  | मंगल  | बुध   | राहु  | ---        |
| दशम भाव |   |   | मक     | 17:57:10 | --        | श्रवण      | -- | 22  | शनि   | चंद्र | बुध   | --         |

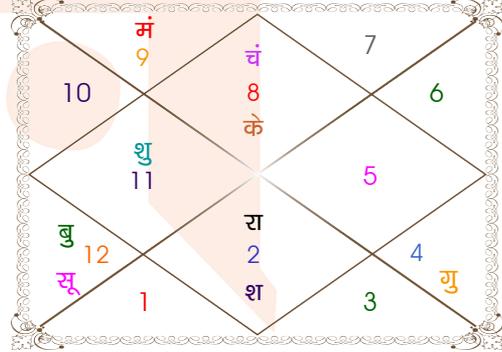
व - वकी स - स्थिर  
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त  
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:53:52

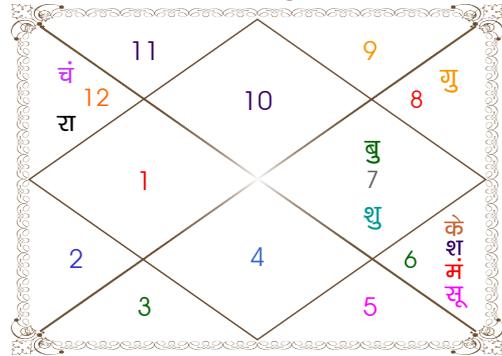
### लग्न-चलित



### चन्द्र कुंडली



### नवमांश कुंडली



## चलित तथा निरयण भाव चलित

### चलित अंश

| भाव | भाव संधि         | भाव मध्य         |
|-----|------------------|------------------|
| 1   | मेष 15:06:31     | वृष 02:32:23     |
| 2   | वृष 15:06:31     | वृष 27:40:38     |
| 3   | मिथुन 10:14:46   | मिथुन 22:48:54   |
| 4   | कर्क 05:23:02    | कर्क 17:57:10    |
| 5   | सिंह 05:23:02    | सिंह 22:48:54    |
| 6   | कन्या 10:14:46   | कन्या 27:40:38   |
| 7   | तुला 15:06:31    | वृश्चिक 02:32:23 |
| 8   | वृश्चिक 15:06:31 | वृश्चिक 27:40:38 |
| 9   | धनु 10:14:46     | धनु 22:48:54     |
| 10  | मकर 05:23:02     | मकर 17:57:10     |
| 11  | कुम्भ 05:23:02   | कुम्भ 22:48:54   |
| 12  | मीन 10:14:46     | मीन 27:40:38     |

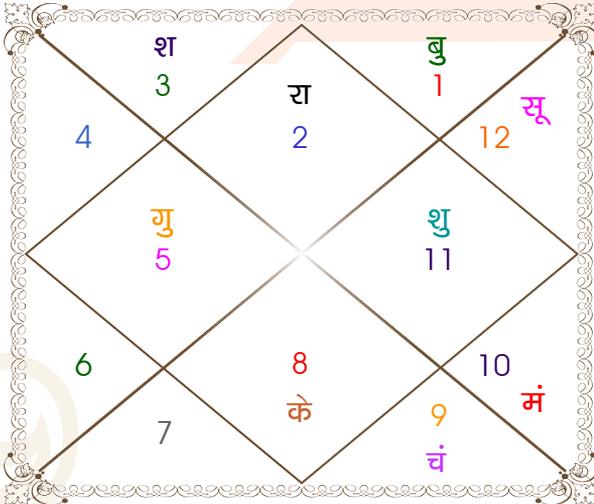
### निरयण भाव चलित

| भाव | राशि    | अंश      |
|-----|---------|----------|
| 1   | वृष     | 02:32:23 |
| 2   | वृष     | 29:03:48 |
| 3   | मिथुन   | 22:50:48 |
| 4   | कर्क    | 17:57:10 |
| 5   | सिंह    | 17:49:45 |
| 6   | कन्या   | 24:06:51 |
| 7   | वृश्चिक | 02:32:23 |
| 8   | वृश्चिक | 29:03:48 |
| 9   | धनु     | 22:50:48 |
| 10  | मकर     | 17:57:10 |
| 11  | कुम्भ   | 17:49:45 |
| 12  | मीन     | 24:06:51 |

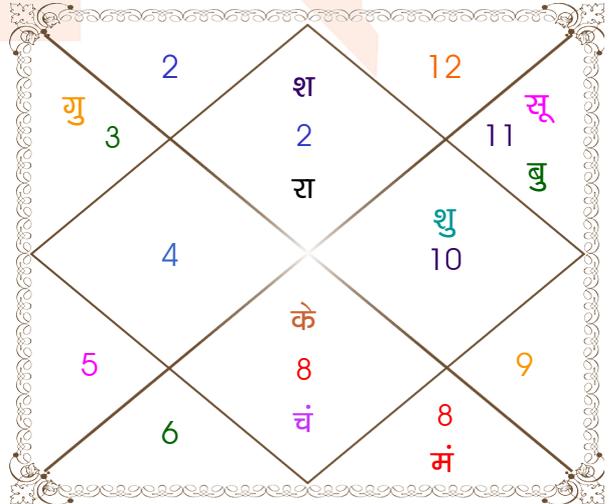
### तारा चक्र

| जन्म     | सम्पत्  | विपत्       | क्षेम      | प्रत्यारि | साधक    | वध      | मित्र      | अतिमित्र  |
|----------|---------|-------------|------------|-----------|---------|---------|------------|-----------|
| ज्येष्ठा | मूल     | पूर्वाषाढा  | उत्तराषाढा | श्रवण     | धनिष्ठा | शतभिषा  | पू०भाद्रपद | उ०भाद्रपद |
| रेवती    | अश्विनी | भरणी        | कृतिका     | रोहिणी    | मृगशिरा | आर्द्रा | पुनर्वसु   | पुष्य     |
| आश्लेषा  | मघा     | पू०फाल्गुनी | उ०फाल्गुनी | हस्त      | चित्रा  | स्वाति  | विशाखा     | अनुराधा   |

### चलित कुंडली



### भाव कुंडली



## विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 3 वर्ष 0 मास 18 दिन

| बुध 17 वर्ष     | केतु 7 वर्ष      | शुक्र 20 वर्ष    | सूर्य 6 वर्ष     | चंद्र 10 वर्ष    |
|-----------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 24/03/2003      | 11/04/2006       | 11/04/2013       | 11/04/2033       | 11/04/2039       |
| 11/04/2006      | 11/04/2013       | 11/04/2033       | 11/04/2039       | 11/04/2049       |
| 00/00/0000      | केतु 07/09/2006  | शुक्र 10/08/2016 | सूर्य 29/07/2033 | चंद्र 10/02/2040 |
| 00/00/0000      | शुक्र 07/11/2007 | सूर्य 10/08/2017 | चंद्र 28/01/2034 | मंगल 10/09/2040  |
| 00/00/0000      | सूर्य 14/03/2008 | चंद्र 11/04/2019 | मंगल 05/06/2034  | राहु 11/03/2042  |
| 00/00/0000      | चंद्र 13/10/2008 | मंगल 10/06/2020  | राहु 29/04/2035  | गुरु 11/07/2043  |
| 00/00/0000      | मंगल 11/03/2009  | राहु 11/06/2023  | गुरु 16/02/2036  | शनि 09/02/2045   |
| 00/00/0000      | राहु 30/03/2010  | गुरु 09/02/2026  | शनि 28/01/2037   | बुध 11/07/2046   |
| 24/03/2003      | गुरु 06/03/2011  | शनि 11/04/2029   | बुध 04/12/2037   | केतु 09/02/2047  |
| गुरु 02/08/2003 | शनि 13/04/2012   | बुध 10/02/2032   | केतु 11/04/2038  | शुक्र 10/10/2048 |
| शनि 11/04/2006  | बुध 11/04/2013   | केतु 11/04/2033  | शुक्र 11/04/2039 | सूर्य 11/04/2049 |

| मंगल 7 वर्ष      | राहु 18 वर्ष     | गुरु 16 वर्ष     | शनि 19 वर्ष      | बुध 17 वर्ष      |
|------------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| 11/04/2049       | 10/04/2056       | 11/04/2074       | 11/04/2090       | 12/04/2109       |
| 10/04/2056       | 11/04/2074       | 11/04/2090       | 12/04/2109       | 00/00/0000       |
| मंगल 07/09/2049  | राहु 23/12/2058  | गुरु 29/05/2076  | शनि 14/04/2093   | बुध 08/09/2111   |
| राहु 25/09/2050  | गुरु 17/05/2061  | शनि 10/12/2078   | बुध 23/12/2095   | केतु 05/09/2112  |
| गुरु 01/09/2051  | शनि 23/03/2064   | बुध 17/03/2081   | केतु 31/01/2097  | शुक्र 06/07/2115 |
| शनि 10/10/2052   | बुध 11/10/2066   | केतु 21/02/2082  | शुक्र 02/04/2100 | सूर्य 12/05/2116 |
| बुध 07/10/2053   | केतु 29/10/2067  | शुक्र 22/10/2084 | सूर्य 15/03/2101 | चंद्र 11/10/2117 |
| केतु 05/03/2054  | शुक्र 29/10/2070 | सूर्य 10/08/2085 | चंद्र 15/10/2102 | मंगल 08/10/2118  |
| शुक्र 06/05/2055 | सूर्य 23/09/2071 | चंद्र 10/12/2086 | मंगल 23/11/2103  | राहु 27/04/2121  |
| सूर्य 10/09/2055 | चंद्र 23/03/2073 | मंगल 16/11/2087  | राहु 29/09/2106  | गुरु 25/03/2123  |
| चंद्र 10/04/2056 | मंगल 11/04/2074  | राहु 11/04/2090  | गुरु 12/04/2109  | 00/00/0000       |

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 3 वर्ष 0 मा 29 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

## विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

|  |  |  |  |  |
|--|--|--|--|--|
| <b>शुक्र - गुरु</b><br>11/06/2023<br>09/02/2026  | <b>शुक्र - शनि</b><br>09/02/2026<br>11/04/2029   | <b>शुक्र - बुध</b><br>11/04/2029<br>10/02/2032   | <b>शुक्र - केतु</b><br>10/02/2032<br>11/04/2033  | <b>सूर्य - सूर्य</b><br>11/04/2033<br>29/07/2033   |
| गुरु 19/10/2023<br>शनि 21/03/2024<br>बुध 06/08/2024<br>केतु 02/10/2024<br>शुक्र 13/03/2025<br>सूर्य 01/05/2025<br>चंद्र 21/07/2025<br>मंगल 16/09/2025<br>राहु 09/02/2026 | शनि 11/08/2026<br>बुध 22/01/2027<br>केतु 30/03/2027<br>शुक्र 09/10/2027<br>सूर्य 06/12/2027<br>चंद्र 11/03/2028<br>मंगल 18/05/2028<br>राहु 07/11/2028<br>गुरु 11/04/2029 | बुध 04/09/2029<br>केतु 04/11/2029<br>शुक्र 25/04/2030<br>सूर्य 16/06/2030<br>चंद्र 10/09/2030<br>मंगल 09/11/2030<br>राहु 14/04/2031<br>गुरु 30/08/2031<br>शनि 10/02/2032 | केतु 05/03/2032<br>शुक्र 15/05/2032<br>सूर्य 06/06/2032<br>चंद्र 11/07/2032<br>मंगल 05/08/2032<br>राहु 08/10/2032<br>गुरु 04/12/2032<br>शनि 09/02/2033<br>बुध 11/04/2033 | सूर्य 16/04/2033<br>चंद्र 25/04/2033<br>मंगल 02/05/2033<br>राहु 18/05/2033<br>गुरु 02/06/2033<br>शनि 19/06/2033<br>बुध 05/07/2033<br>केतु 11/07/2033<br>शुक्र 29/07/2033 |
| <b>सूर्य - चंद्र</b><br>29/07/2033<br>28/01/2034   | <b>सूर्य - मंगल</b><br>28/01/2034<br>05/06/2034  | <b>सूर्य - राहु</b><br>05/06/2034<br>29/04/2035  | <b>सूर्य - गुरु</b><br>29/04/2035<br>16/02/2036  | <b>सूर्य - शनि</b><br>16/02/2036<br>28/01/2037   |
| चंद्र 13/08/2033<br>मंगल 24/08/2033<br>राहु 21/09/2033<br>गुरु 15/10/2033<br>शनि 13/11/2033<br>बुध 09/12/2033<br>केतु 19/12/2033<br>शुक्र 19/01/2034<br>सूर्य 28/01/2034 | मंगल 04/02/2034<br>राहु 23/02/2034<br>गुरु 13/03/2034<br>शनि 02/04/2034<br>बुध 20/04/2034<br>केतु 27/04/2034<br>शुक्र 19/05/2034<br>सूर्य 25/05/2034<br>चंद्र 05/06/2034 | राहु 24/07/2034<br>गुरु 06/09/2034<br>शनि 28/10/2034<br>बुध 13/12/2034<br>केतु 02/01/2035<br>शुक्र 25/02/2035<br>सूर्य 14/03/2035<br>चंद्र 10/04/2035<br>मंगल 29/04/2035 | गुरु 07/06/2035<br>शनि 24/07/2035<br>बुध 03/09/2035<br>केतु 20/09/2035<br>शुक्र 08/11/2035<br>सूर्य 22/11/2035<br>चंद्र 17/12/2035<br>मंगल 03/01/2036<br>राहु 16/02/2036 | शनि 11/04/2036<br>बुध 30/05/2036<br>केतु 19/06/2036<br>शुक्र 16/08/2036<br>सूर्य 02/09/2036<br>चंद्र 01/10/2036<br>मंगल 21/10/2036<br>राहु 12/12/2036<br>गुरु 28/01/2037 |
| <b>सूर्य - बुध</b><br>28/01/2037<br>04/12/2037   | <b>सूर्य - केतु</b><br>04/12/2037<br>11/04/2038  | <b>सूर्य - शुक्र</b><br>11/04/2038<br>11/04/2039   | <b>चंद्र - चंद्र</b><br>11/04/2039<br>10/02/2040   | <b>चंद्र - मंगल</b><br>10/02/2040<br>10/09/2040  |
| बुध 13/03/2037<br>केतु 31/03/2037<br>शुक्र 21/05/2037<br>सूर्य 06/06/2037<br>चंद्र 02/07/2037<br>मंगल 20/07/2037<br>राहु 05/09/2037<br>गुरु 16/10/2037<br>शनि 04/12/2037 | केतु 12/12/2037<br>शुक्र 02/01/2038<br>सूर्य 08/01/2038<br>चंद्र 19/01/2038<br>मंगल 26/01/2038<br>राहु 15/02/2038<br>गुरु 04/03/2038<br>शनि 24/03/2038<br>बुध 11/04/2038 | शुक्र 11/06/2038<br>सूर्य 29/06/2038<br>चंद्र 29/07/2038<br>मंगल 20/08/2038<br>राहु 14/10/2038<br>गुरु 01/12/2038<br>शनि 28/01/2039<br>बुध 21/03/2039<br>केतु 11/04/2039 | चंद्र 07/05/2039<br>मंगल 24/05/2039<br>राहु 09/07/2039<br>गुरु 19/08/2039<br>शनि 06/10/2039<br>बुध 18/11/2039<br>केतु 06/12/2039<br>शुक्र 25/01/2040<br>सूर्य 10/02/2040 | मंगल 22/02/2040<br>राहु 25/03/2040<br>गुरु 22/04/2040<br>शनि 26/05/2040<br>बुध 25/06/2040<br>केतु 08/07/2040<br>शुक्र 12/08/2040<br>सूर्य 23/08/2040<br>चंद्र 10/09/2040 |

## शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

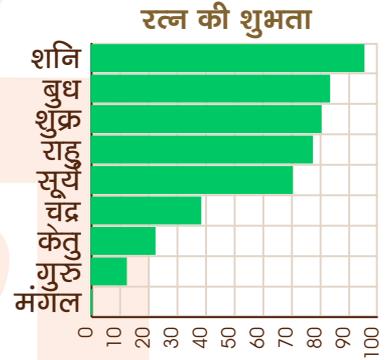
|              |                        |
|--------------|------------------------|
| मूलांक       | 6                      |
| भाग्यांक     | 5                      |
| मित्र अंक    | 3, 4, 6, 9, 5          |
| शत्रु अंक    | 1, 7, 8                |
| शुभ वर्ष     | 24,33,42,51,60         |
| शुभ दिन      | शनि, बुध, शुक्र        |
| शुभ ग्रह     | शनि, बुध, शुक्र        |
| मित्र राशि   | कर्क, सिंह             |
| मित्र लग्न   | सिंह, मकर, मीन         |
| अनुकूल देवता | शिव                    |
| शुभ रत्न     | हीरा                   |
| शुभ उपरत्न   | जरकिन, ओपल             |
| भाग्य रत्न   | नीलम                   |
| शुभ धातु     | रजत                    |
| शुभ रंग      | रजत                    |
| शुभ दिशा     | दक्षिणपूर्व            |
| शुभ समय      | सूर्योदय               |
| दान पदार्थ   | मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन |
| दान अन्न     | चावल                   |
| दान द्रव्य   | दूध                    |

## रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

| रत्न     | ग्रह  | शुभता | क्षेत्र  |
|----------|-------|-------|--|
| नीलम     | शनि   | 95%   | स्वास्थ्य, भाग्योदय, व्यावसायिक उन्नति           |
| पन्ना    | बुध   | 83%   | धनार्जन, धन, सन्तति सुख                          |
| हीरा     | शुक्र | 80%   | व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति |
| गोमेद    | राहु  | 77%   | स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति                     |
| माणिक्य  | सूर्य | 70%   | धनार्जन, सुख                                     |
| मोती     | चंद्र | 38%   | दाम्पत्य कष्ट, पराक्रम हानि                      |
| लहसुनिया | केतु  | 22%   | दाम्पत्य कष्ट, दुर्घटना                          |
| पुखराज   | गुरु  | 12%   | पराक्रम हानि, दुर्घटना, हानि                     |
| मूंगा    | मंगल  | 0%    | दुर्घटना, व्यय, दाम्पत्य कष्ट                    |



### दशानुसार रत्न विचार

| दशा   | समाप्ति    | माणिक्य | मोती | मूंगा | पन्ना | पुखराज | हीरा | नीलम | गोमेद | लहसुनिया |
|-------|------------|---------|------|-------|-------|--------|------|------|-------|----------|
| बुध   | 11/04/2006 | 77%     | 12%  | 0%    | 95%   | 12%    | 86%  | 95%  | 77%   | 22%      |
| केतु  | 11/04/2013 | 58%     | 12%  | 0%    | 83%   | 12%    | 86%  | 83%  | 64%   | 47%      |
| शुक्र | 11/04/2033 | 58%     | 12%  | 0%    | 89%   | 12%    | 92%  | 100% | 83%   | 34%      |
| सूर्य | 11/04/2039 | 83%     | 50%  | 0%    | 83%   | 25%    | 67%  | 83%  | 64%   | 0%       |
| चंद्र | 11/04/2049 | 77%     | 56%  | 0%    | 89%   | 12%    | 80%  | 95%  | 64%   | 0%       |
| मंगल  | 10/04/2056 | 77%     | 50%  | 0%    | 70%   | 25%    | 80%  | 95%  | 64%   | 34%      |
| राहु  | 11/04/2074 | 58%     | 12%  | 0%    | 83%   | 12%    | 86%  | 100% | 89%   | 0%       |
| गुरु  | 11/04/2090 | 77%     | 50%  | 0%    | 70%   | 38%    | 67%  | 95%  | 77%   | 22%      |
| शनि   | 12/04/2109 | 58%     | 12%  | 0%    | 89%   | 12%    | 86%  | 100% | 83%   | 0%       |

## साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

### प्रथम चक्र:

|                        |   |       |
|------------------------|---|-------|
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005 | ----- |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | 15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014 | ----- |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017 | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | 26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020 | ----- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | 29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025 | ----- |

### द्वितीय चक्र:

|                        |   |       |
|------------------------|---|-------|
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | 31/05/2032-13/07/2034   | ----- |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | 28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044 | ----- |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046                       | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | 08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049                       | ----- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | 25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055                       | ----- |

### तृतीय चक्र:

|                        |   |       |
|------------------------|---|-------|
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | 11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064 | ----- |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | 04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073                       | ----- |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | 05/02/2073-31/03/2073 23/10/2073-16/01/2076 11/07/2076-11/10/2076 | ----- |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | 16/01/2076-11/07/2076 11/10/2076-15/01/2079                       | ----- |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | 12/04/2081-03/08/2081 07/01/2082-20/03/2084                       | ----- |

### शनि का ढैया फल

| ढैया के प्रकार         | फल   | क्षेत्र            |
|------------------------|------|--------------------|
| अष्टम स्थानस्थ ढैया    | सम   | धन                 |
| साढ़ेसाती प्रथम ढैया   | शुभ  | शत्रु व रोग मुक्ति |
| साढ़ेसाती द्वितीय ढैया | सम   | दाम्पत्य कलह       |
| साढ़ेसाती तृतीय ढैया   | अशुभ | दुर्घटना से बचाव   |
| चतुर्थ स्थानस्थ ढैया   | शुभ  | व्यावसायिक उन्नति  |

## साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।**

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।  
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

**ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।**

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

**ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

## मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।  
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए। जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

\*\*\*\*\*

आपकी कुंडली में जन्म के समय मंगल की स्थिति अष्टम भाव में है अतः आप एक मांगलिक कन्या हैं। चूंकि आपकी कुंडली में यह दोष भंग नहीं हो रहा है अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा पित जनित एवं रक्त विकार से आप यदा कदा कष्ट की अनुभूति करेंगी। साथ ही पति का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं उनके स्वभाव में तेजस्विता का भाव रहेगा। यदा कदा परस्पर संबंधों में मतभेद उत्पन्न होंगे लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा तथा इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव भी नहीं होगा। साथ ही समय समय पर आपके सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करने में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। इसके प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व किसी वार्ता में बाधा भी आ सकती है परन्तु अन्त में आपको सफलता प्राप्त होगी। सामान्यतया सुख पूर्वक आपका दाम्पत्य जीवन व्यतीत होगा।

आपकी कुंडली में मंगल अष्टम भाव में है अतः आपका स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा गर्मी आदि से आपको किंचित परेशानी की अनुभूति हो सकती है। सांसारिक महत्व के कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आय स्रोतों में वृद्धि होगी तथा आवश्यक मात्रा में लाभार्जन भी होता रहेगा परन्तु इस में आपको अधिक परिश्रम एवं पराक्रम का प्रदर्शन करना पड़ेगा। द्वितीय भाव पर मंगल की दृष्टि से पारिवारिक शान्ति मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य मतभेद भी उत्पन्न होंगे। वाणी में ओजस्विता का भाव भी रहेगा परन्तु धनार्जन अच्छा रहेगा। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा। पराक्रम में वृद्धि होगी जिससे आप अपने उन्नति मार्ग को प्रशस्त करने में समर्थ रहेंगी।

अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको ऐसे

मांगलिक पुरुष से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष भंग हो सके। इसके लिए पुरुष की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु की स्थिति होनी चाहिए। इस प्रकार मांगलिक दोष भंग हो जाने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा ऐश्वर्य आदि से आप सुसम्पन्न होकर आनन्दपूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगी। साथ ही परस्पर संबंधों में भी मधुरता तथा सहयोग का भाव विद्यमान रहेगा।



## कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।  
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

### काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

### जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में अनन्त नामक कालसर्प योग विद्यमान है। लेकिन यह केवल आंशिक रूप में विद्यमान है। फलस्वरूप जातक के जीवन में समय-समय पर थोड़ी बहुत बाधाएं आती रहती हैं। व्यक्तित्व निर्माण में परिश्रम करने पर ही लाभ मिलता है। विद्या व्यवसाय सामान्य रहती है। आगे बढ़ने के लिए थोड़ा बहुत संघर्ष करना पड़ता है। मानसिक परेशानियाँ समय-समय पर आती रहती हैं। जीवन में कभी-कभी अपयश मिलता है जिससे जातक को विरक्ति पैदा होती है। जातक अपने जीवन में अनेक बार कार्य (व्यवसाय) को बदलता है। जिसमें कभी नुकसान भी हाथ लगता है। खासकर साहूकारी के व्यवसाय में अधिक नुकसान पाता है। इस योग के कारण अनेक तरह के नीच कर्म जातक के द्वारा किये जाते हैं और जातक को समय-समय पर रोग व्याधि ग्रसित करती रहती है। इसमें थोड़ा अधिक खर्च हो जाने के कारण आर्थिक स्थिति असामान्य हो जाती है एवं जातक समय-समय पर मानसिक रूप से अशान्त हो जाता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए कभी-कभी दुःखमय हो जाता है तथा मातृ-पितृ सुख का थोड़ा बहुत अभाव रहता है। अपने रिश्तेदार समय-समय पर नुकसान पहुँचाते हैं। जातक को केस मुकदमों में प्रायः हार का सामना करना पड़ता है और सामाजिक प्रतिष्ठा का हास होता है। जातक को प्रायः सुख का अभाव रहता है और अनेक शत्रु होते हैं। वे समय-समय पर षड्यन्त्र रचते रहते हैं। परन्तु वे अपने षड्यन्त्र में सफल नहीं होते। दूसरों से कभी अपमान सहना पड़ता है। लेकिन इतना सब कुछ होने के बाद भी जातक के जीवन में एक चमत्कारिक समय आता है।

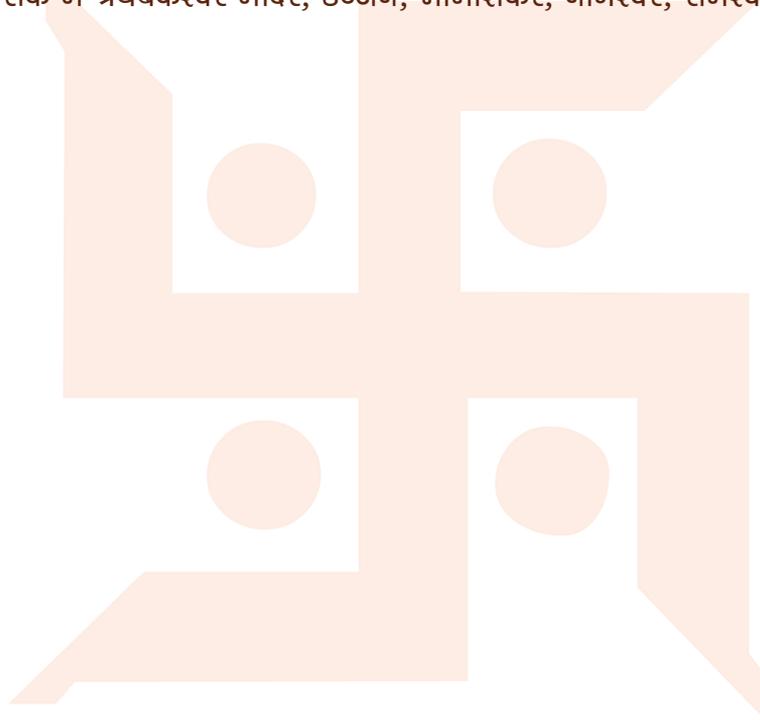
यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें। अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. 'ॐ नमः शिवाय' का प्रतिदिन 108 बार जप करें। कुल जप संख्या- 21000।
3. ताम्बे के लोटे में नाग के जोड़े बहते पानी में एक बार प्रवाहित करें।
4. नवनाग स्तोत्र का एक वर्ष तक प्रतिदिन पाठ करें।
5. राहु के महादशा, अन्तर्दशा आने पर राहु मन्त्र के जाप कम से कम प्रतिदिन 108 बार करें। जप संख्या अट्ठारह हजार (18000) है।
6. शुभ मुहूर्त में अभिमन्त्रित गोमेद धारण करें।
7. श्रावणमास में 30 दिन तक महादेव का अभिषेक करें।
8. सरस्वती जी की एक वर्ष विधिवत उपासना करें।
9. राहु कवच एवं स्तोत्र का पाठ करें।
10. प्रत्येक सोमवार को दही से भगवान शंकर पर - ॐ हर हर महादेव कहते हुए अभिषेक करें। यह केवल 16 सोमवार तक करें।

11. रसोईघर में बैठकर भोजन करें।
12. शुभ मुहूर्त में बहते पानी में कोयला तीन बार प्रवाहित करें।
13. गोमेद, सुवर्ण, तिल, सरसों, नीलवस्त्र, खड्ग, कम्बल, आदि समय-समय पर दान करें।
14. शुभ मुहूर्त में मुख्य द्वार पर चाँदी का स्वस्तिक एवं दोनो ओर धातु से निर्मित नाग चिपका दें।
15. हनुमान चालीसा का 108 बार पाठ करें।

#### विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



# पितृदोष विचार

## पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

## पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

### पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

### पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

**ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।**

**नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥**

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

### **पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :**

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

### **आपकी कुण्डली में पितृदोष**

- चन्द्र पर राहु और शनि दोनों का प्रभाव है ।
- नवम् भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में चन्द्र और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में चंद्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः माता के पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ सोमवार को प्रतिदिन शिवलिंग पर कच्चा दूध व जल चढ़ाएं साथ ही शिव पंचाक्षरी “ॐ नमः शिवाय” का मंत्र जाप करें । दुर्गा, शिव या पार्थिवेश्वर महादेव का पूजन करें । ढाक की समिधा व जड़ी-बूटियों से हवन करे तथा गौ-दान करें ।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें । पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें । शम्मी की समिधा से हवन करें । बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें । गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान

दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

### नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

## ग्रह फल

### सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

मीन राशि में रवि हो तो जातक बुद्धिमान्, यशस्वी, व्यापारी, विवेकी ज्ञानी, योगी, प्रेमी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला और स्वसुर से लाभन्वित होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः पिता की आप हमेशा प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा लेकिन समय समय पर मध्यम रूप से वे शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं इसका उनके पास अभाव नहीं रहेगा। साथ ही जीवन में आपको हर प्रकार से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपके आय स्रोतों की वृद्धि करने एवं उनमें उन्नति प्राप्त करने के लिए वे आपको पूर्ण आर्थिक सहयोग तथा निर्देश भी प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रखेंगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध अच्छे होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी विद्यमान रहेंगे। जीवन में आप उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करती रहेगी एवं सुख दुःख में उनकी सेवा भी करती रहेंगी।

### चन्द्र

सप्तमभाव में चन्द्रमा हो तो जातक सभ्य, धैर्यवान् नेता, विचारक, प्रावासी, जलयात्रा करने वाला, व्यापारी, अभिमानी, वकील, कीर्तिमान, शीतल स्वभाववाला एवं स्फूर्तिवान् होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वाला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में प्यार एवं स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी शादी करने में भी उनका विशेष सहयोग रहेगा तथा आपको व्यापारादि कार्यों में भी पूर्ण आर्थिक या अन्य रूप से सहयोग तथा प्रोत्साहन देंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धालु रहेंगी एवं हमेशा उनका हार्दिक सम्मान करेंगी। उनकी बातों से आप प्रायः सहमत रहेंगी तथा उसका पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेदों की भी उत्पत्ति होगी जिसके कारण कभी कभी अप्रिय स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। परन्तु कुल मिलाकर आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा एक

दूसरें का सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

### मंगल

आठवेंभाव में मंगल हो तो जातक व्याधिस्त, व्यसनी, मद्यपायी, कठोरभाषी, उन्मत्त, नेत्ररोगी, शस्त्रचोर, संकोची, अग्निभीरु, धनचिन्ता युक्त एवं रक्तविकारयुक्त होता है।

धनु राशि में मंगल हो तो जातक चतुर राजनैतिक नेता, कम सन्तान, लोकप्रिय प्रसिद्ध, उच्चप्रशासकीय पद प्राप्त करने वाला, कठोर, शठ, कूर, परिश्रमी एवं पराधीन होता है।

आपके जन्म समय में मंगल अष्टम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से वे अस्वस्थ रहेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में आप समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उन से आर्थिक तथा अन्य रूप से सहयोग अर्जित करती रहेंगी। धन धान्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा अतः यदा कदा विशिष्ट धन की प्राप्ति आप उनसे कर सकेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह भाव रखेंगी एवं अवसरानुकूल सुख दुःख में उनको अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी। आपके आपसी संबंध भी ठीक ही रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इनमें तनाव तथा कटुता की स्थिति भी उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय बाद स्वतः ही सब कुछ ठीक हो जाएगा। साथ ही आप सुख दुःख में भी उनका सहयोग करने के लिए करने के लिए उद्यत रहेंगी।

### बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

मीन राशि में बुध हो तो जातक स्वाभिमानी, सदाचारी, सहनशील, भाग्यवान्, प्रवास में सुखी, मिष्टभाषी, कार्यदक्ष, धनसंही, नकल करने का स्वभाव, चिन्तित एवं छोटे दिल का होता है।

### गुरु

तृतीयभाव में गुरु हो तो जातक शास्त्रज्ञ, जितेन्द्रिय, लेखक, कामी, प्रवासी, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, मन्दाग्नि, वाहनयुक्त, पर्यटनशील, विदेशप्रिय, ऐश्वर्यवान् बहुत भाई बहन, आस्तिक एवं योगी होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

## शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

कुम्भ राशि में शुक्र हो तो जातक शान्तिप्रिय, दूसरों को सहायता करने वाला, सच्चरित्र, सुन्दर, लोकप्रिय, चिन्ताशील एवं रोग से सन्तप्त होता है।

## शनि

लग्न (प्रथम) में शनि मकर, कुम्भ तथा तुला का हो तो धनाढ्य, सुखी, धनु और मीन राशियों में हो तो अत्यन्त धनवान् और सम्मानित एवं अन्य राशियों का हो तो अशुभ होता है।

वृष राशि में शनि हो तो जातक असत्य भाषी, द्रव्यहीन, मूर्ख, वचनहीन, सफल, एकान्तप्रिय, छोटी-छोटी बातों के कारण चिंतित एवं संयमी होता है।

## राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

वृष राशि में राहु हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं धनी होता है।

## केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

वृश्चिक राशि में केतु हो तो जातक धूर्त, वाचाल, कुष्ठरोगी, क्रोधी निर्धन एवं व्यसनी होता है।

## दशा विश्लेषण

महादशा :- शुक्र  
( 11/04/2013 - 11/04/2033 )

शुक्र की महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 11/04/2013 को आरंभ और 11/04/2033 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र दशम भाव में स्थित है। यह एक शुभ ग्रह है और अच्छे स्वाद, संगीत, नाटक, ऐंद्रिय सुखों का द्योतक है। यह दो राशियों वृष तथा तुला का स्वामी है। यह कन्या राशि में नीच का तथा मीन में उच्च का होता है। यह विवाह का कारक भी है। आपकी जन्मकुण्डली में दशम भाव में स्थित शुक्र की चतुर्थ भाव पर दृष्टि है और इस भाव पर उसका शुभ प्रभाव पड़ रहा है। भाव जिसमें यह स्थित है अर्थात् दशम भाव सम्मान, प्रतिष्ठा, नाम और यश, सफलता और प्रतिष्ठा, ख्याति, लक्ष्य अधिकार, कर्तव्य, पदोन्नति, आधुनिकता, उच्च पद तथा राजकी सम्मान एवं जाँघों का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शुक्र दशम भाव में स्थित है जहां से यह आपकी जन्मकुण्डली के चतुर्थ भाव, जो परिवार का भाव और सुख स्थान है, को, एक केन्द्र से दूसरे केन्द्र तक देखता है। इसके फलस्वरूप आपकी इस दशा काल में कोई स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी और आप सभी तरह का पारिवारिक आनन्द उठाएँगे।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र जीवनचर्या तथा व्यवसाय के दशम भाव में स्थित है, जो आपको इस दशा काल में चल तथा अचल सम्पत्ति अर्जित करने के अनेक अवसर प्रदान करेगा। आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में अच्छी स्थिति के कारण सम्मान प्राप्त करेंगे तथा शुक्र की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने के कारण आपको नया घर तथा वाहन प्राप्त होने की संभावना है।

व्यवसाय :

आप जो कोई भी व्यवसाय अपनाएँगे उसमें सफल होंगे। आपको आदर और प्रतिष्ठा मिलेगी। आप सुखी और तेज होंगे और आपको व्यवसाय के सिलसिले में यात्रा से लाभ होगा। आपके भाई-बहन आपकी सहायता करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

अपने व्यवसाय तथा नौकरी के प्रति समर्पित होने के कारण आप अपने जीवन साथी का अनजाने में तिरस्कार करेंगे जिससे आपके परिवार में दरार पैदा हो सकती है और घरेलू जीवन बरवाद हो सकता है।

**अंतर्दशा :- शुक्र - गुरु  
( 11/06/2023 - 09/02/2026 )**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 11/04/2013 को आरंभ हुई थी और 11/04/2033 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 11/06/2023 को प्रारंभ होकर 09/02/2026 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में तृतीय भाव में स्थित है। तृतीय भाव मष्तिष्क का रुझान, बुद्धि, साहस, छोटे भाई-बहन, लघु यात्राएं, विचार संचार, हाथ, कंधे आदि का परिचायक है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। तृतीय भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 7, 9, 11 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप आशावादी और दार्शनिक स्वभाव के रहेंगे। कंजूसी बढ़ सकती है; संतान और परिवारजनों से लगाव में कमी आ सकती है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए गुरु के वैदिक मंत्र के 19000 जाप करें।

**अंतर्दशा :- शुक्र - शनि  
( 09/02/2026 - 11/04/2029 )**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 11/04/2013 को प्रारंभ हुई थी और वद 11/04/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 09/02/2026 को प्रारंभ होकर 11/04/2029 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

शनि जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है। यह शुभफल देने में देरी करता है मगर फल मिलता अवश्य है।

प्रथम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 3, 7, 10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है, मष्तिष्क रोग संभव है। पद और सम्मान की भी क्षति हो सकती है। धर्म में आस्था कम हो सकती है। वातरोग संभव हैं। अधिकारीगण अप्रसन्न रह सकते हैं।

परियोजनाओं में देरी होगी मगर सफलता जरूर मिलेगी।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करना श्रेयस्कर होगा :

- पीपल को जल अर्पित करें।
- भोजन करने से पूर्व पहला कौर गाय को दें।
- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।

**अंतर्दशा :- शुक्र - बुध  
( 11/04/2029 - 10/02/2032 )**

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 11/04/2013 को प्रारंभ हुई थी और वद 11/04/2033 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 11/04/2029 जो आपके लिए 10/02/2032 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है।

एकादश भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धनी, सत्यवादी और प्रसन्न होंगे। आपके बहुत से अनुयायी होंगे जो व्यापार की प्रगति में योगदान करेंगे। आपकी ज्ञानपिपासा और बुद्धि तीव्र होगी। ज्ञान की वृद्धि के लिए नये विषयों का अध्ययन कर सकते हैं। वैज्ञानिक खोजों में मन लगेगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।